राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के नेताओं और मुख्यमंत्रियों की बैठक में लोक सभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी द्वारा समापन वक्तव्य

नई दिल्ली - 22 जनवरी, 2008

देश में वर्तमान राजनीतिक हलचल के दौरान आज की बैठक वास्तव में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई है। मई 2004 में लोक सभा चुनावों के बाद पहली बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के घटक दलों के सभी नेतागण अगले संसदीय चुनावों के लिए एक साझा रणनीति बनाने पर विचार-विमर्श करने के लिए एकत्र हुए हैं।

मैं इस गठबंधन के अपने सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने अगले लोक सभा चुनावों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की अगुवाई करने की जिम्मेदारी मुझे सौंपकर, मुझमें विश्वास जताया है। मैं आपको पूरा यकीन दिलाता हें कि मैं इस जिम्मेदारी को निभाने में कोई कसर नहीं छोडुंगा, और इस चुनौतीपूर्ण कार्य में आपका निरंतर समर्थन और सहयोग लेता रहूंगा।

मैं सबसे पहले, इस अवसर पर हमारे नेता, पांच दशकों से मेरे वरिष्ठ सहयोगी और राजग के चेयरमैन, श्री अटल बिहारी वाजपेयी का हृदय से धन्यवाद करता हूँ। जैसाकि मैंने पिछले पाँच दशकों से किया है, वैसे ही मैं अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में उनका विवेकपूर्ण और प्रेरणादायक मार्गदर्शन आगे भी लेता रहूंगा।

मैं राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के संयोजक श्री जार्ज फर्नांडिस और भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह का भी विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का जन्म और प्रादुर्भाव कोई साधारण घटना नहीं है। एक मजबूत और महत्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में, भारतीय जनता पार्टी के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन आजादी के बाद भारत के राजनीतिक इतिहास में एक सबसे बढ़िया और सफल प्रयोग रहा है। यह सुशासन, विकास और व्यापक सुरक्षा की दिशा में भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता का द्योतक है।

परिवर्तन के लिए बिगुल बजाना

इस बैठक से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने कांग्रेस शासित संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की विफल, निकम्मी, भ्रष्ट और अन्दरूनी तौर पर बंटी सरकार के विरूद्ध युद्ध का बिगुल बजा दिया है। हमारा यह लक्ष्य होना चाहिये कि हम न केवल राष्ट्रीय जनतांत्रिक

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

गठबंधन की विजय ही सुनिश्चित करें बल्कि कांग्रेस को उसके शासन काल में ही बुरी तरह से हार का मुंह दिखायें। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि कांग्रेस का अरसे से चला आ रहा कुशासन और इसका पुराना अहंकार कि इसका तो भारत में शासन करने का जन्म-सिद्ध अधिकार है, ही हमारे देश की अधिकांश समस्याओं का मूल कारण है और देश को इसे भुगतना पड़ रहा है। वर्ष 2008 के शुरू में यह बैठक इसी आशय से बुलायी गई है। यह हमारे संकल्प और निश्चय का प्रतीक है कि हम **वर्ष 2008 को केन्द्र में परिवर्तन का वर्ष** बनायें जिसकी ठोस अभिव्यक्ति है -- संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन को पराजय दिलाना और जब कभी जनता को पन्द्रहवीं लोक सभा के चयन का मौका मिले तो राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को निर्णायक जनाधार के साथ सत्ता में लौटाना।

लोग हमें फिर से जनादेश देना चाहते हैं। अब हमें जनता को यकीन दिलाना होगा कि हम अपनी एकता, संकल्प और जीत हासिल करने के अभियान की ठोस रणनीति के साथ उनकी आकांक्षाओं को पूरा करेंगे। हमें जनता को यह दिखाना होगा कि हम उनका जनाधार हासिल करने के ही योग्य नहीं है बल्कि भारत को प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए इस जीत को सफलता में परिवर्तित करने में भी बहुत सक्षम हैं।

संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार का रिकार्डः विश्वासघात और चहुंमुखी असफलता

एक ऐसी सरकार जिसने आम आदमी से विश्वासघात किया है, जो अप्रत्याशित मूल्य वृद्धि के लिए जिम्मेदार है, जिसने करोड़ों आम लोगों के छोटे पारिवारिक बजटों में बड़े छेद कर दिये हैं, ऐसी सरकार जो करोड़ों किसानों की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार रही है, एक ऐसी सरकार जो भारत के इतिहास में अमीर और गरीब लोगों के बीच की खाई को और चौड़ा करने की जिम्मेदार रही है, एक ऐसी सरकार जिसने भ्रष्टाचार और अपराधीकरण को संरक्षण और बढ़ावा दिया है और जो आतंकवाद तथा नक्सलवाद को रोकने में पूरी तरह विफल रही है। लोग ऐसी सरकार को दुबारा से सत्ता में देखना नहीं चाहते। लोग निश्चित रूप से ऐसी सरकार को लम्बे समय तक सत्ता में बने रहना नहीं देखना चाहते जिसका मुखिया नाममात्र का प्रधानंत्री हो, जिसमे हाथ में कोई राजनीतिक अधिकार न हों और जिसका हुकुमनामा अपने ही मंत्रिमण्डल, घटक दलों और समर्थक पार्टियों पर न चलता हो।

संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के भीतर शुरू से अन्दरूनी मतभेदों और कमजोर अगुवाई का बोलबाला रहा है जिसके फलस्वरूप, यह सरकार सक्रियता और स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ कभी भी सही ढंग से काम नहीं कर पाई है, यही नहीं, पिछले वर्ष के इसके कार्य- निष्पादन से ऐसा लगता है कि यह सरकार पूरी तरह से गतिहीनता की स्थिति में आ गई है।

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

कांग्रेस पार्टी जो संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन का मुख्य घटक है, देश में चारों तरफ अपना जनाधार खोती जा रही है। वर्ष 2005-2007 के बीच जिन विधान सभाओं के चुनाव हुए थे, कांग्रेस केवल चार राज्यों - असम, मणिपुर, हरियाणा और गोवा जिनमें लोक सभा की कुल मिलाकर 28 सीटें हैं, में ही अपनी सरकारें बना पाई है। कांग्रेस पार्टी को वर्ष 2007 में केवल गोवा में ही विजय हासिल हुई थी। यहाँ भी इसकी सरकार बिखराव के कगार पर खड़ी है। इसे गुजरात और हिमाचल प्रदेश में हाल ही में हुए दो विधान सभा चुनावों में करारी हार का मुह देखना पड़ा है। खासकर, गुजरात में कांग्रेस की हार का देशव्यापी असर पड़ा है क्योंकि इसने राज्य में विधान सभा चुनावों को भारतीय जनता पार्टी के विरूद्ध परोक्ष रूप से राष्ट्रीय जनमत - संग्रह में परिवर्तित कर दिया था।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ही एकमात्र विकल्प

उपर्युक्त सभी तथ्य भारत की जनता को इस नतीजे पर पहुंचने के लिए प्रेरित कर रहे हैं कि (क) राष्ट्र के महत्वपूर्ण हित और लोगों की भलाई संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के हाथों में सुरक्षित नहीं हैं, और (ख) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन जिसने वर्ष 1998 - 2004 के बीच श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के योग्य नेतृत्व में एक स्थायी, सशक्त और परिणामोमुखी सरकार प्रदान की थी, ही एकमात्र विकल्प है।

आज जैसी कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के नेताओं और मुख्यमंत्रियों की बैठक हुई है, हम **सुशासन, विकास और सुरक्षा** के आदर्शों के प्रति अपने आप को फिर से कटिबद्ध होने की प्रतिज्ञा लेते हैं। आगामी सप्ताहों और महीनों में हमारे गठबंधन के घटक दलों के नेता और कार्यकर्ता देश के सभी क्षेत्रों और समाज के सभी वर्गों तक पहुँचंगे।

हम अपनी राज्य सरकारों की उपलब्धियों, नीतियों, कार्यक्रमों और भावी वादों पर बल देंगे। **हमने सुशासन, विकास और सुरक्षा पर राजग के सभी मुख्यमंत्रियों की एक बैठक बुलाने का पहले ही निश्चय कर लिया है।**

तत्कालिक चुनौतियाँ

अभी तक यह लगता था कि संसदीय चुनाव 2008 के पूर्वार्ध में होंगे। हालांकि, जैसा मैंने पहले कहा कि राजग की सत्ता में वापसी के भय ने कांग्रेस और कम्युनिस्टों को जल्दी चुनाव करवाने से रोक दिया है।

आज जो लगता है कि चुनाव या तो अपने निर्धारित समय में 2009 की शुरूआत में या इस वर्ष के अन्त में हो सकते हैं। राजग को चुनावी लड़ाई, जब भी हो, के लिये अपनी पूरी तैयारी रखनी चाहिये

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

हमारा तत्कालिक कार्य 2008 में होने वाले विभिन्न विधान सभा चुनावों में सफल होने की तैयारी करना है। सबसे पहले कर्नाटक में चुनाव होंगे, जहाँ कांग्रेस को अवश्य ही हराना है। कर्नाटक चुनावों के बारे में मैं सरकार से आग्रह करता हूँ कि इन्हें स्थगित करने के लिए किसी भी बहानेबाजी पर विचार न करें।

राष्ट्र और आम आदमी से जुड़े मुद्दे पर एक आन्दोलन और लोक शिक्षण का सतत् अभियान चलाने के लिये हमें एक योजना की रूपरेखा बनानी चाहिये। हमें इस उद्देश्य से संसद के आगामी बजट सत्र का प्रभावी उपयोग करना चाहिये।

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com